



भारत का राजपत्र

The Gazette of India

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड ३—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (1)

प्राधिकर से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं ५९६१

लाई दिल्ली, बघवार, नवम्बर 12, 2008/कालिक 21, 1930

Na. 5961

NEW DELHI, WEDNESDAY, NOVEMBER 12, 2008/KARTIKA 21, 1930

लिल शंखराम

(राजस्व विभाग)

अधिकारी

नई दिल्ली, 12 नवम्बर, 2008

सं. 118/2008-स्वीका शालक (गै.ट्र.)

साक्षि.नि. 786(अ).—सीमा शुल्क अधिनियम, 1962 (1962 का 52) की धारा 137 की धारा उप-धारा (3) के साथ परिवर्तित, धारा 156 की उप-धारा (2) के उपाधार्य (ज) के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए केंद्र सरकार एवं द्वारा सीमा शुल्क (अपराधों का शमन) नियमावली, 2005 के निम्नलिखित नियमों में संशोधन करती है यथा :—

- (1) इन नियमों को सीमा शुल्क (अपराधों का शमन) संशोधन नियमावली, 2008 कहा जायेगा ।
 (2) ये सरकारी राजपत्र में अपने प्रकाशन की तिथि से प्रथतीत होंगे ।
2. सीमा शुल्क (अपराधों का शमन) नियमावली, 2005 (एतश्मन्, जिसे उस्त नियमावली कहा गया है), में—
 (क) नियम 4 में, उप-नियम (3) में, परन्तुके के पश्चात् निम्नलिखित को वांतःस्थापित किया जायेगा यथा :—
 “बरत्ते और भी कि अवेदन को तब तक स्वीकार नहीं किया जायेगा जब तक कि उस मालके के लिए जिसके लिए आवेदन किया गया है मुगलान योग्य शुल्क, दण्ड और ब्याज का भुगतान नहीं कर दिया जाता है”
 (ख) नियम 5 के स्थान पर, निम्नलिखित नियम को प्रतिस्थापित किया जायेगा, यथा :—
 “5. शमन राशि का निर्धारण,—इस अधिनियम के विभिन्न प्रावधानों के अंतर्गत अपराधों के शमन के लिये, शमन राशि यही होगी जैसा कि निम्नलिखित सारणी में दर्शाया गया होगा :
 बरत्ते कि, यदि कोई व्यक्ति, एक ही माल से संबंधित, अपराध करता है जो कि निम्नलिखित सारणी में उल्लिखित एक से अधिक बारों में आये हैं, और जहां शुल्क अपवर्कन की राशि, या द्वां बैंक की राशि या शुल्क से छूट, जो कि इस अधिनियम में निर्धारित की रखी गई है, या ऐसे माल के बाजार मूल्य को राशि ऐसे सभी अपराधों के लिए भी बही है तो ऐसे मालमें शमन की राशि भी वही होगी जो कि उस अपराध के लिये निर्धारित की गई होगी, जिसके लिए उच्च शमन राशि चिनिएक्स की गई है ।

सारणी

क्र. सं.	अपराध	राशि
(1)	(2)	(3)
1.	इस अधिनियम की धारा 132 के अंतर्गत विनिर्दिष्ट अपराध	पहली बार के अपराध के लिए पचास हजार रुपये और इसके पश्चात् ऐसे ही हर अगले अपराध के लिए इस राशि में शत प्रतिशत की बढ़ोतरी होती जायेगी।
2.	इस अधिनियम की धारा 133 के अंतर्गत विनिर्दिष्ट अपराध	पहली बार के अपराध के लिए पचास हजार रुपये और इसके पश्चात् ऐसे ही हर अगले अपराध के लिए इस राशि में शत प्रतिशत की बढ़ोतरी होती जायेगी।
3.	इस अधिनियम की धारा 134 के अंतर्गत विनिर्दिष्ट अपराध	पहली बार के अपराध के लिए पचास हजार रुपये और इसके पश्चात् ऐसे ही हर अगले अपराध के लिए इस राशि में शत प्रतिशत की बढ़ोतरी होती जायेगी।
4.	इस अधिनियम की धारा 135(1)(क) के अंतर्गत विनिर्दिष्ट अपराध	माल के बाजार मूल्य के 10 प्रतिशत तक की राशि तक या एक लाख रुपये, दोनों में से जो भी अधिक हो।
5.	इस अधिनियम की धारा 135(1)(ख) के अंतर्गत विनिर्दिष्ट अपराध	माल के बाजार मूल्य के 5 प्रतिशत तक की राशि तक या एक लाख रुपये, दोनों में से जो भी अधिक हो।
6.	इस अधिनियम की धारा 135(1)(ग) के अंतर्गत विनिर्दिष्ट अपराध	माल के बाजार मूल्य के 10 प्रतिशत तक की राशि तक या एक लाख रुपये, दोनों में से जो भी अधिक हो।
7.	इस अधिनियम की धारा 135(1)(घ) के अंतर्गत विनिर्दिष्ट अपराध	माल के बाजार मूल्य के 10 प्रतिशत तक की राशि तक या एक लाख रुपये, दोनों में से जो भी अधिक हो।
8.	इस अधिनियम की धारा 135(क) के अंतर्गत विनिर्दिष्ट अपराध	माल के बाजार मूल्य के 5 प्रतिशत तक की राशि तक या एक लाख रुपये, दोनों में से जो भी अधिक हो।

(ग) उक्त नियमावली में सलान फार्म में, ऋण संख्या 12 के पश्चात् निम्नलिखित को अंतःश्रापति किया जायेगा, यथा :—

“12क. क्या शुल्क, दण्ड और ज्याज की राशि का भुगतान कर दिया गया है यहि हौं तो उसका व्यौग क्या है”

[फा. सं. 450/67/2003-सीमा शुल्क-IV (पार्ट)]

असीम कुमार, अमर सचिव

पाद टिप्पणी :—प्रधान अधिसूचना सं. 114/2005-सीमा शुल्क (गैट) दिनांक 30 दिसम्बर, 2005 को सा.का.नि. 755(अ), दिनांक 30 दिसम्बर, 2005 के तहत भारत के राजपत्र, असाधारण, भाग II, खंड 3, उप-खंड (i) में प्रकाशित किया गया है।

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Revenue)

NOTIFICATION

New Delhi, the 12th November, 2008

No. 118/2008-Customs (N.T.)

G.S.R. 786(E).—In exercise of the powers conferred by clause (h) of sub-section (2) of Section 156 read with sub-section (3) of Section 137, of the Customs Act, 1962 (52 of 1962), the Central Government hereby makes the following rules to amend Customs (Compounding of Offences) Rules, 2005, namely :—

1. (1) These rules may be called the Customs (Compounding of Offences) Amendment Rules, 2008.

(2) They shall come into force on the date of their publication in the Official Gazette.

2. In the Customs (Compounding of Offences) Rules, 2005 (hereinafter referred to as the said rules),—

(a) in rule 4, in sub-rule (3), after the proviso, the following shall be inserted, namely :—

“Provided further that application shall not be allowed unless the duty, penalty and interest liable to be paid have been paid for the case for which application has been made.”;

(b) for rule 5, the following rule shall be substituted, namely :—

“5. Fixation of the compounding amount.—For the purpose of compounding of offences under the various provisions of the Act, the compounding amount shall be as provided in the following Table :

Provided that if a person has, in respect of same goods, committed offences falling under more than one category specified above and where amount of duty evasion, or, amount of drawback or exemption from duty, provided under the Act in connection with export goods, or amount of market value of the goods is same for all such offences, the compounding amount, in such cases, shall be the amount determined for the offence for which a higher compounding amount has been prescribed.

TABLE

Sl. No.	Offence	Compounding amount
(1)	(2)	(3)
1.	Offence specified under Section 132 of the Act	Fifty thousand rupees for the first offence and to be increased by hundred per cent of this amount for each subsequent offence.
2.	Offence specified under Section 133 of the Act	Fifty thousand rupees for the first offence and to be increased by hundred per cent of this amount for each subsequent offence.
3.	Offence specified under Section 134 of the Act	Fifty thousand rupees for the first offence and to be increased by hundred per cent of this amount for each subsequent offence.
4.	Offence specified under Section 135(1)(a) of the Act	Upto ten per cent of the amount of market value of the goods or one lakh rupees, whichever is higher.
5.	Offence specified under Section 135(1)(b) of the Act	Upto five per cent of the amount of market value of the goods or one lakh rupees, whichever is higher.
6.	Offence specified under Section 135(1)(c) of the Act	Upto ten per cent of the amount of market value of the goods or one lakh rupees, whichever is higher.
7.	Offence specified under Section 135(1)(d) of the Act	Upto ten per cent of the amount of market value of the goods or one lakh rupees, whichever is higher.
8.	Offence specified under Section 135A of the Act	Upto five per cent of the amount of market value of the goods or one lakh rupees, whichever is higher.

(c) in the Form appended to the said rules, after serial number 12, the following shall be inserted, namely :—

“12A. Whether the amount of duty, penalty and interest have been paid and if yes, the details thereof.”

[F. No. 450/67/2003-Cus. IV (P)]

ASEEM KUMAR, Under Secy.

Note :—The principal notification No. 114/2005-Customs (N.T.), dated the 30th December, 2005, was published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i), v/d/e number G.S.R. 755(E), dated the 30th December, 2005.